सृष्टि

(खण्ड काव्य)

भगत सिंह 'विहंस'

प्रकाशक

अनुराधा प्रकाशन

साहित्य-अध्यात्म एवं जीवन मूल्यों को समर्पित

नई दिल्ली

सृष्टि

(खण्ड काव्य)

लेखक
भगत सिंह 'विहंस'

ISBN No.: 978-93-5741-087-8

मूल्य	:	*240/-*
प्रथम संस्करण	:	*सन् 2021*
सर्वाधिकार लेखकाधीन	:	*भगत सिंह 'विहंस'*
प्रकाशक	:	*अनुराधा प्रकाशन*
		1193, पंखा रोड, नांगल राया
		नई दिल्ली-110046
		दूरभाष : 011-28520555
		चलभाष : 09213135921
ईमेल	:	*anuradhaprakashan@gmail.com*
वेबसाइट	:	*www.anuradhaprakashan.com*

समर्पण

अपने पिता

स्व. सरदार गुरूबचन सिंह जी

एवं

माता स्व. श्रीमती प्रकाश कौर जी

के चरणों में

"सृष्टि"

सादर समर्पित करता हूँ।

भगत सिंह 'विहंस'

(कवि,चिंतक व साहित्यकार)

'विहंस' जी का रचना संसार

जी हाँ मित्रो! भगत सिंह 'विहंस' जी ने अपने नाम को अपने क्रियाकलापों, साहित्य-सृजन के माध्यम से सार्थक किया है। यदि हम इनकी पूर्व में प्रकाशित दो पुस्तकों – 1. **सपनों का भारत** (कहानी संग्रह), 2. **पीपल की छाँव में** (कविता संग्रह) पर दृष्टि डालें तथा **सृष्टि** (काव्य संग्रह) आपके हाथों में है। इन सबको पढ़कर आप भी मेरी बात से सहमत होंगे, ऐसी मुझे आशा है।

सपनों का भारत (कहानी संग्रह) में 11 कहानियां इस बात का प्रमाण हैं जिनमें माध्यम से 'विहंस' जी ऋषि-मुनि, तपस्वियों, देशभक्तों के सपनों का भारत किस प्रकार वास्तविकता की पृष्ठ भूमि पर उतर सकता है, उसकी तड़प भी है और उसके लिए सुझाव भी दिए हैं। कविता संग्रह '**पीपल की छाँव में**' में इनकी कविताओं में ईश भक्ति है, देशभक्ति और साहित्य प्रेम समाहित है। इस प्रकार अब साहित्य के आकाश में एक और विस्तृत सोच, दूरदृष्टिता के स्वर गुंजायमान करता काव्य लेकर प्रस्तुत हुए हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि '**सृष्टि**' साहित्य जगत में अनूठा नाम करेगी। इसके अतिरिक्त 'विहंस' जी की दो पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होकर हमें पढ़ने को सुलभ होंगी – **गुलदस्ता** (कहानी संग्रह), **परदेसी राँझा** (काव्य संग्रह)

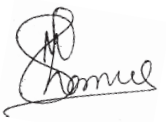

मनमोहन शर्मा 'शरण'

पत्रकार व प्रकाशक

अपनी बात

कोई भी व्यक्ति कभी - भी इस सृष्टि का वर्णन नहीं कर सकता इतनी विशाल असीमित है जिसे कोई भी नहीं जान सकता। मैंने भी एक छोटा सा असफल प्रयास किया है और कुछ भी सृष्टि के बारे में नहीं लिख पाया। जो चीजें दृष्टिगोचर हो रहीं हैं या जिन्हें मैं महसूस कर रहा हूँ उन्हीं के बारे में ही थोड़ा सा लिखने का प्रयास किया हूँ।

सृष्टि के नियम अपरिवर्तित हैं जिन्हें मनुष्य चाह कर भी कभी नहीं बदल सकता जैसे कि पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति। पूर्व में सूर्य का उदय होना, पश्चिम में ढल जाना। रात का होना, दिन का होना। पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना। सूर्य, चाँद, सितारों भरा आकाश। हवाओं का चलना। बादलों का बनना, पानी का बरसना। जन्म, मरण ये सब प्राकृतिक घटना है ये सब कार्य सृष्टि के नियमानुसार हो रहें हैं। इसी प्रकार की अनेकों घटनायें हैं जिन्हें हम कभी भी नहीं बदल सकते।

इतने बड़े संसार में मनुष्य के अलावा भी बहुत प्राणी निवास करते हैं विभिन्न प्रकार के पेड़ - पौधे और अनेकों प्रकार के जड़ - चेतन हैं सबके अपने स्वभाव, गुण धर्म एवं उपयोगिता हैं। भले हम इस रहस्य को नहीं समझ पाये हैं लेकिन कोई भी वस्तु यहां बेकार नहीं है जिसका यहाँ उपयोग न हो, यह कितना बड़ा आश्चर्य है। हमेशा से ही प्रकृति के साथ चलने पर एवं उसके नियमों का पालन करने पर हम इस संसार में सुरक्षित रह सकते हैं नियमों को तोड़ने या प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने पर हमें कई प्रकार की आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

हमें जरूरत है प्रकृति के साथ तारतम्य बिठा कर चलने की, एक

सीमा के अन्दर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की। तभी हम सुगमतापूर्वक जीवन जी सकते हैं। इस सृष्टि का नियम है जैसा हम करेंगे वैसा ही फल पायेंगे इस सिद्धांत को कोई नहीं बदल सकता।

अतः हमें प्रकृति के नियमों के अनुसार ही चलना है जिससे कि सभी प्राणी स्वस्थ सुन्दर और खुशहाल जीवन जी सकें। मैने जो भी लिखा और प्रयास किया है मुझे उम्मीद है कि पाठकों को पसंद आयेगा।

भगत सिंह 'विहंस'

आभार

मैं आभारी हूँ **श्री जीवन नाथ मिश्र जी** अध्यक्ष भारतेंदु साहित्य समिति अम्बिकापुर, सरगुजा का जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग के बिना इस कार्य के लिए समय निकालना, इस कार्य को पूरा करना मेरे लिए नामुमकिन था तथा **डॉ. सुधीर पाठक जी** सचिव भारतेंदु साहित्य समिति अम्बिकापुर, सरगुजा का जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य सुझाव दिये। उनके सुझावों का समावेश इस काव्य में समय-समय पर किया गया है।

मैं कृतज्ञ हूँ अपने बड़े भाई स्व. **सरदार हरबंस सिंह चावला जी, सरदार सुरजीत सिंह चावला जी** का, जिन्होंने बचपन से ही मुझे बहुत प्यार दिया और हमेशा मेरी प्रतिभा को प्रोत्साहित करते रहे।

मेरे इस काव्य-संग्रह का प्रकाशन बगैर मेरी धर्मपत्नी **श्रीमती सतनाम कौर** के सुझावों एवम् सहयोग के बिना संभव नहीं था। इनके द्वारा ही इस काव्य-संग्रह का नाम '**सृष्टि**' सुझाया गया जो मेरे इष्ट मित्रों और शुभचिन्तकों को भी बहुत पसंद आया। साथ ही मेरे पुत्र **सरदार जसप्रीत सिंह, सरदार नवप्रीत सिंह** और **सरदार हरजोत सिंह** एवं पुत्रवधु **श्रीमती जसमीत कौर**, **श्रीमती अमन दीप कौर** और पौत्र **कुंवर चावला, सैबजीत सिंह चावला** ने भी सदैव मुझे साहित्यक गतिविधियों में सहयोग दिया।

मैं कुंवर चावला, सैबजीत सिंह चावला का विशेष सहयोग मानता हूँ जो मेरी रचनाओं के पन्नों को लेकर भाग जाते थे दादाजी हम वापिस नहीं देंगे कहकर कुछ समय के लिए मेरी मानसिक थकावट दूर कर देते थे।

मैं अत्यधिक आभारी हूँ **श्वेता तिवारी**, अम्बिकापुर सरगुजा का जिन्होंने अति अल्प समय में इस काव्य-संग्रह के टंकण एवम् रचनाओं को

व्यवस्थित करने में बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया। जिससे इस काव्य-संग्रह को मैं यह रूप दे सका, जो कि इनके सहयोग के बिना मेरे लिए असंभव कार्य था।

मैं अत्यधिक आभारी हूँ **श्रीमती अर्चना पाठक** सदस्य भारतेंदु साहित्य समिति अम्बिकापुर, सरगुजा का जिनके द्वारा काव्य-संग्रह का संपादन किया गया।

मैं अपने भारतेंदु साहित्य के सदस्यों, इष्ट मित्रों, शुभचिंतकों एवं समालोचकों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मेरी रचनाओं को निखारने एवं सँवारने के लिए बहुमूल्य सुझाव दिये।

अलौकिक संरचना का विश्वबोध

सृजन का गीत गाने के लिए, स्वर साधना होगा नियति के द्वार से रिश्ता, समेकित साधना होगा है जितनी रोशनी सूरज में, शशि में और तारों में निहित है रोशनी उसकी, उसे अवगाहना होगा वही है सृष्टि का सृष्टा, रमा, मिट्टी के कण, कण में वही धड़कन हृदय की है, उसे अवधारणा होगा ।।

मैं अपनी बात उपरोक्त पंक्तियों से प्रारम्भ करता हूँ।

इस पुस्तक के रचयिता कवि हृदय **श्री भगत सिंह 'विहंस'** की बात कर रहा हूँ, जिन्होंने संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा के कुल गीत की रचना की है। उनके सार्वभौम चिन्तन की बात कर रहा हूँ। सृष्टि के पाण्डुलिपि को पढ़ कर ऐसा लगा कि सृष्टि से संबंध सबका रहता है। पर जब वह सृजक सृष्टि देता है परखने और अवगाहन करने की प्रेरणा देता है। तभी सृष्टिबोध होता है। तभी वृत्तात्मक ऐसा सृजन संभव हो पाता है।

कोमल अनुभूतियों का कवि श्री विहंस अपने अन्दर और अपने बाहर जिस सृष्टि का दर्शन करते हैं, उस सृष्टि में वो कुछ नया तलाशने और उसे पहचानने, उसे पा लेने का प्रयास करते हैं। उस सृष्टि को, जिस सृष्टि के वे अविभाज्य अंग हैं। तब उन्हें जड़ और चेतन जगत का नियामक एक दृष्टिगोचर होता है। जो स्वयं सृष्टि है और सृष्टि का सृजेता भी है। यह कवि की आत्मबोधी स्थिति है। जिसकी अभिव्यक्ति कविता के रूप में हुई है। यहाँ उनकी रचनाओं के माध्यम से उनकी दृष्टि में सृष्टि क्या है, उसे समझने का प्रयास करते हैं। पुस्तक की प्रारंभिक चार पंक्तियाँ यथा-

कब सृजन हुआ है सृष्टि का
यह कोई जान नहीं पाया
विस्तार कहाँ तक कैसे है
इसे कोई जान नही पाया

सृजनकर्ता ने सृष्टि का सृजन कब कैसे कर दिया, सृष्टि का असीम विस्तार कैसे संभव हो पाया ऐसा कह कवि उस असीम के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हुआ प्रतीत होता है। कवि के मानसिक संदोह को समझने के लिए उनकी चार पंक्तियाँ को और आधार स्वरूप लेते हैं-

कितने लोक परलोक यहाँ
किसकी क्या कहानी है
स्वर्ग कहाँ और नर्क कहाँ
यह माया भी अनजानी है

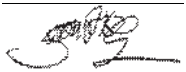

जे.एन.मिश्र
अम्बिकापुर सरगुजा (छ.ग)

सृष्टि पर एक दृष्टि

वरिष्ठ साहित्यकार **भगत सिंह चावला 'विहंस' जी,** जिन्होंने संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा के कुल गीत की रचना की है, के मन में दशकों से कई प्रश्नोत्तर उमड़-घुमड़ रहे थे। इन पर चिन्तन-मनन कर 'सृष्टि' नामक काव्य ग्रंथ की रचना की है। आपके मन में सर्वप्रथम जो प्रश्न उठा वह है-

कब सृजन हुआ है सृष्टि का
यह कोई जान नहीं पाया
विस्तार कहाँ तक कैसे है
इसे कोई नाप नहीं पाया

आपकी दृष्टि सहज रूप से ऊपर उठती है तो आकाश आपको रहस्य भरा होने के साथ ही पावन व मनभावना भी लगता है। प्रस्तुत है पंक्तियाँ-

रहस्य भरा आकाश यहाँ
कितना ही मनभावन है
अनसुलझा यहाँ सब कुछ
कितना सुंदर और पावन है

विस्तृत आकाश से नीचे आते ही धरती माता के गोद में जहाँ समस्त दिनचर्या सम्पन्न होती है जिन्दगी गुजर रही है। और जब लेखनी उठाते हैं तो वह भी असमर्थता प्रगट कर देती है। यथा-

धरती माँ तेरी महिमा का
कैसे मैं गुणगान करूँ

विहंस जी के भावों की उड़ान जहाँ आकाश की ऊँचाईयों को स्पर्श

करते हैं वहीं सागर तल की गहराई को भी नाप देते हैं। प्रस्तुत हैं पक्तियाँ-

सागर के अंदर में भी
अद्‌भुत जीवों का डेरा है
हैं रंग-बिरंगे छोटे-बड़े
पानी ही साँझ-सवेरा है

अवलोकन हर साहित्य प्रेमी को करना चाहिए। सिर्फ पठन-पाठन करना नहीं संग्रह भी करना आवश्यक है ताकि जब इच्छा हो पन्नों को पलट लें।

डॉ. सुधीर पाठक 'अव्यय'
सचिव, भारतेंदु साहित्य

सृष्टि

कब सृजन हुआ है सृष्टि का
यह कोई जान नहीं पाया
विस्तार कहाँ तक कैसे है
इसे कोई नाप नहीं पाया

रहस्य भरा है कण - कण में
यह लीला अजब निराली है
देखो तो सब भरा - भरा
यदि देखो तो सब खाली है

हर इक रचना है अनुपम
कोई न उसका सानी है
जादू सा लगता है सब
कोई भेद न पाया ज्ञानी है

क्या हुआ हो रहा होना है
है इसका भी कुछ ज्ञान नहीं
क्या खोया है क्या पाया है
इसको भी सकते जान नहीं

लेकर कहाँ है जा रही
हमें वक्त की बहती धारा है
न चाहकर भी हैं जा रहे
यह कैसा अचरज न्यारा है

नश्वर है यहाँ सब कुछ
स्थिर न किसी को जान यहाँ
जो आया है सो जायेगा
कुछ दिन के सब मेहमान यहाँ

तम व प्रकाश का हो रहा
कितना अद्भुत संयोग यहाँ
इक आ रहा इक जा रहा
निश दिन का क्या योग यहाँ

नभ मंडल पर देखें यदि
कितने ही अजब नजारे हैं
झिलमिल-झिलमिल दमक रहे
यहाँ चारों ओर सितारे हैं

सुदूर सितारों की दुनिया
देखो कितनी अनजानी है
वहाँ पर सब क्या कैसे है
क्या उनकी जन्म कहानी है

रहस्य भरा आकाश यहाँ
कितना ही मनभावन है
अनसुलझा है यहाँ सब कुछ
कितना सुन्दर और पावन है

पूरब में उगता सूरज
पश्चिम में ढल जाता है
घनघोर घना अँधेरा तो
इससे हरदम शरमाता है

सूरज की तपती किरणें ही
पृथ्वी की जीवन दाता हैं
जो कुछ भी यहाँ बिखरा है
सबकी यही विधाता हैं

ये हैं तो सब रोशन है
नहीं तो घनघोर अँधेरा है
इनकी प्रचंड शक्ति से
यहाँ साँझ और सवेरा है

चलते रहते हैं अविरल
सारे जग का भार लिये
इनसे सारी दुनिया है
सब पर हैं उपकार किये

देखो चन्दा मामा भी
लगते कितने प्यारे हैं
कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं
कभी करते मौन इशारे हैं

अद्भुत इनकी कलाओं के
कैसे ये अजब नजारे हैं
कितने आकर्षक व सुन्दर हैं
नभ के ये दीपक प्यारे हैं

बादलों में कभी छिपते
कभी आगे पीछे चल रहे
इनके दर्शन पाने को
देखो सब हैं मचल रह

जाने कहाँ हैं भाग रहे
और कहाँ तक जाना है
किसकी है कहाँ मंजिल
किसका कहाँ ठिकाना है

कितने ग्रह, उपग्रह यहाँ
कितने नक्षत्र, सितारे हैं
सबकी अपनी दुनिया है
सबके अपने नजारे हैं

कितने लोक परलोक यहाँ
किसकी क्या कहानी है
स्वर्ग कहाँ और नर्क कहाँ
यह माया भी अनजानी है

आकाश पाताल हैं कितने
यह कोई जान नहीं पाया
सुदूर दूर पर क्या कुछ है
इसे कोई देख नहीं पाया

कहीं तप रहा यहाँ सब कुछ
कहीं ठंडा घनघोर अँधेरा है
कब होती किसकी साँझ यहाँ
किसका कब हुआ सवेरा है

सब कुछ यहाँ है घूम रहा
निश्चित पथ आकार लिये
कितना नियमित अनुशासित है
अपना कर्तव्य व्यवहार लिये

कभी ग्रहण लगा है सूरज को
कभी चन्दा को भी लगता है
कोई बन रहा कोई टूट रहा
अम्बर ऐसे ही सजता है

आकाश गंगा को देखें यदि
सितारों का संसार यहाँ
लाखों करोड़ों मिल जुल कर
न जाने चले किस ओर कहाँ

महसूस किया यहाँ सबने
तुझको कोई देख नहीं पाया
तुम बिन क्षण नहीं जीवन है
है पवन तेरी कैसी माया

कभी कहलाती है हवा
कभी आँधी बन जाती है
तूफानों का कभी रूप लिये
जग सारे को थर्राती है

यह सारा जग तुझसे है
तुम बिन सब वीरान यहाँ
ये खेल जो है जग जीवन का
बिन तेरे होता कहाँ

अम्बर पर हैं घूम रहे
ये बादल कितने प्यारे हैं
सबका मन मोह लेते हैं
इनके कर्तव्य न्यारे हैं

कभी गरजेंगे कभी बरसेंगे
जल का ये अम्बार लिये
भूमंडल प्रकंपित करते हैं
विद्युत की तीव्र हुंकार लिये

अम्बर पर जब विचरते हैं
अनुपम ये आकार लिये
बहुत ही सुन्दर लगते हैं
अपनी ये जलधार लिये

वसुधा की प्यास बुझाने को
वर्षा सुहानी आई है
रिमझिम की झंकार लिये
अनुपम फुहारें लाई है

भर रहे सब ताल तलइये
नदी नालों के हैं भाग्य जगे
हर ओर बिखरी हरियाली से
सुन्दर सारा संसार लगे

सूर्य किरणों संग जल बूंदो ने
कैसा ये खेल रचाया है
सतरंगों से सजा इन्द्रधनुष
नभ पर देखो बन आया है

जल के तीनों रूपों का
है कितना अनुपम काम यहाँ
इनसे ही जग जीवन है
चल रहा सारा जहाँ

द्रव, वाष्प, बर्फ बनकर
अद्भुत शक्ति बन जाता है
यहाँ इससे ही हरियाली है
प्राणों का गहरा नाता है

सब कुछ यहाँ हरा - भरा
और जीवों में हलचल है
असंभव था तुम्हारे बिन
रह सकता कोई इक पल है

अग्नि तेरी माया की
सबसे अलग कहानी है
तुझसे तप बनता है सब
तुझ बिन राहें अनजानी हैं

तू है तो सब रोशन है
नहीं तो घनघोर अंधेरा है
न होती साँझ कभी यहाँ
न होता कभी सवेरा है

तेरे बल से ही जग में
हर ओर हुआ उजाला है
इस अनुपम जगत की रचना में
तेरा स्थान निराला है

धरती माँ तेरी महिमा
का कैसे मैं गुणगान करूँ
कितना विशाल असीमित सब
कैसे इसका बखान करूँ

न शब्द और न शक्ति है
न बुद्धि न विवेक यहाँ
तेरे चमत्कारों का वर्णन
सौ जन्मों में होगा कहाँ

सब तुझसे हैं जन्म लिये
और तुझमें ही मिल जायेंगे
यहाँ किसलिये क्यों आयें हैं
यह कभी समझ न पायेंगे

लाखों करोड़ों वर्षों से
जन्म मरण का खेल यहाँ
आ रहा कोई जा रहा
कहीं बिछुड़न कहीं मेल यहाँ

कई प्रकार के जीवों ने
जन्म लिया और चले गये
सब यहाँ क्षणभंगुर है
देकर हैं संदेश गये

कहीं ऊँचे हैं पहाड़ बने
कहीं समुद्र हैं अपार यहाँ
कहीं हरा-भरा है लगता सब
कहीं रेतों के अम्बार यहाँ

कहीं लम्बे - लम्बे पेड़ों का
कितना सुन्दर संसार यहाँ
कहीं छोटे - छोटे पौधों से
सजा हुआ घर - बार यहाँ

हर इक पत्ता अलग - अलग
है कितना सुन्दर आकार लिये
बहती पवन संग लहराते
अपनी - अपनी झंकार लिये

कहीं लदे हुये फल फूलों से
कभी ठूँठ बन कर खड़े हुये
कहीं पत्तों से सजी डालियाँ
कभी पत्ते सारे झड़े हुये

इस जगत की रचना में
बहुत इनका उपयोग यहाँ
इनसे ही जग जीवन है
है चल रहा सारा जहाँ

हैं छोटे कुछ बड़े पेड़
खड़े हुये हैं सीना तान
अद्‌भुत फल फूलों वाले
बढ़ा रहे वसुधा की शान

जड़ से लेकर पत्तों तक
इनका जीवन निराला है
हर हिस्सा परमार्थ भरा
अपना सब देने वाला है

अनेकों प्रजातियों में बँटा
इनका अनुपम संसार यहाँ
क्यों कैसे कब उत्पन्न हुये
न पा सकता कोई पार यहाँ

पाषाण युग से नव युग तक
मानव को इनका साथ मिला
अति भीषण बाधाओं में भी
चले हैं हाथ से हाथ मिला

हर जगह ये हैं उपयोगी
इनसे सब कुछ बना यहाँ
क्या घर और क्या बाहर
इनके बिन कुछ नहीं यहाँ

जब पवन संग ये लहराते
कितना सुन्दर संसार लगे
आँधी और तूफानों में
इनमें शक्ति अपार जगे

आसरा हैं पशु - पक्षियों का
राहगीरों को विश्राम मिले
धूप, शरद और वर्षा में
हर प्राणी को आराम मिले

छोटे, कीट, पतंगों से भी
इनका अनुपम नाता है
छोटा बड़ा हर प्राणी
इनसे ही भोजन पाता है

डालों पर बैठ परिन्दे जब
जीवन का गान सुनाते हैं
आनन्दित होता है तन - मन
धरती को स्वर्ग बनाते हैं

इनके कारण ही यह धरती
सुन्दर और मनभावन है
इनका जीवन सदा से ही
उपयोग भरा व पावन है

जड़, तना और पत्तों का
हर पल है उपयोग यहाँ
ये मानव के चिर साथी हैं
कैसा सुंदर संयोग यहाँ

अगर धरा पर न होते
होता जग वीरान यहाँ
शायद हम सब न होते
है इनका ही एहसान यहाँ

लदे हुए हैं पेड़ों पर
अति सुंदर आकार लिये
कई रंगों और सुगंधो में
गुणों का अंबार लिये

कड़वे कसैले खट्टे - मीठे
फलों की कैसी शान यहाँ
उपयोगी हैं हर ऋतुओं में
अनोखी इनकी पहचान यहाँ

स्वाद और शक्ति वाले
कुछ मीठे जल से भरे हुये
लगते हैं सबको प्यारे
कुछ डालों पर कुछ झड़े हुए

कुछ गुठली कुछ बीजों वाले
कुछ लम्बे कुछ गोल यहाँ
कुछ चपटे कुछ छोटे हैं
हरे पके अनमोल यहाँ

कई प्रकार के रंगो में
फूलों का संसार यहाँ
इनकी अद्‌भुत सुगंधों ने
बनाया है सुंदर जहाँ

है हरपल ये मुस्कुराते
काँटे हो कितने भी पास
अति भीषण बाधाओं में
है संदेश न छोड़ें आस

अल्पकाल के जीवन में
खिलते हैं झड़ जाते हैं
देते हैं जग को खुशियाँ
गम सारा पी जाते हैं

उत्पन्न हुये सब मिट्टी से
मिट्टी में मिल जायेंगे
नश्वर है यहाँ पर सब
दे संदेश यह जायेंगे

मिट्टी, कंकड़, बालू, पत्थर
वसुधा की अद्भुत रचना है
पर जीव हैं उत्पन्न हुए यहाँ
कैसी अनहोनी घटना है

अद्भुत चक्र है मिट्टी का
कैसे सब कुछ बना यहाँ
अनसुलझे हैं रहस्य सभी
बनकर होता फना यहाँ

इस मिट्टी में ही देखो
जो बोते हैं वो पाते हैं
यहाँ छोटे - छोटे बीजों से
विशाल वृक्ष बन जाते हैं

इक बीज होता कई गुना
कैसा मिट्टी का खेल यहाँ
इसके इन अद्भुत गुणों से
जीवन संभव हुआ यहाँ

मिट्टी - मिट्टी सब मिट्टी है
हैं मिट्टी के आकार यहाँ
हर ओर बिखरी मिट्टी है
इससे बना संसार यहाँ

शुरू हुआ सब मिट्टी से
मिट्टी ही रह जानी है
अजर - अमर इस मिट्टी की
अद्भुत यही कहानी है

समय अथाह असीमित है
जीवन के दिन चार यहाँ
जो भी करना है अब कर ले
फिर न मिलना यह जहाँ

अज्ञात देश का वासी यह
भाग रहा जाने किस ओर
इसे पकड़ न कोई पाया
इसकी गति का ओर न छोर

इसकी बहती धारा में
हुए राजा और रंक यहाँ
नहीं रूका किसी की खातिर
न करता किसी में फर्क यहाँ

बीत गया है जो भी पल
फिर वह कभी न आयेगा
सार्थक नहीं हुआ है यदि
वह जीवन भर रूलायेगा

है अनमोल यहाँ हर क्षण
जा रहा माटी के मोल
जो भी कीमत समझ गया
सब मिला उसे खजाना खोल

इसकी गति के आगे
विवश है सारा संसार
कब आया और चला गया
मान रहे सब इससे हार

इसके साथ चले यदि
तो फूलों का संसार यहाँ
पिछड़ गये या रूक गये
तो काँटों के अंबार यहाँ

पल - पल कर भाग रहा
खींच रहा जीवन की डोर
छूट रहे सब संगी साथी
आता जाता है बिन शोर

परिवर्तित होता जड़ - चेतन
वक्त का कैसा खेल यहाँ
कोई न जाने कब किससे
होता बिछुड़न व मेल यहाँ

कब आना है दुनिया में
जाना हैं यहाँ सब छोड़
इसका वक्त भी निश्चित है
सकते घटा न सकते जोड़

गुजर रहे जिन राहों से
चुनते जायें उसके शूल
हर ओर बिखराते जायें
दिये वक्त ने हैं जो फूल

न कभी फिर आना होगा
इन गलियों और राहों में
वक्त के साथ चले जायेंगे
जानें कहाँ हवाओं में

कई हिस्सों में बटी हुई
वसुधा की कैसी रचना है
सबको सब कुछ देती है
कैसी अनुपम घटना है

कहीं बर्फ से ढकी हुई
कहीं दूर - दूर तक पानी है
कहीं पर धरा है सूखी हुई
क्यों यह बातें अनजानी हैं

कहीं रेगिस्तान है यहाँ
कहीं बिखरी हरियाली है
कहीं मेघों ने ढका है नभ
कहीं सूरज की लाली है

उगते सूरज की किरणों से
यहाँ सारा संसार जगे
घनघोर घना अंधियारा
न जाने किस ओर भगे

कई प्रकार की फसलें हैं
कई प्रकार के दाने हैं
हर इक के हैं गुण धर्म
ये रहस्य भी अनजाने हैं

अनेक प्रकार के बीजों का
अद्‌भुत है संसार यहाँ
धरा का संग पाकर ये
इक के होते हजार यहाँ

हैं हर तरह के पौधे
वृक्ष और फल - फूल यहाँ
अपनी आभा बिखराकर
बनाते हैं सुंदर जहाँ

यहाँ कब कैसे क्यों उगे
यह रहस्य भी अनजाना है
आहार सभी का है इनसे
इन बिन सब वीराना है

जब पवन के झोकों संग
हिलते डुलते लहराते हैं
अद्‌भुत दिखता है यह सब
नयनों में न समाते हैं

जड़ और चेतन का सदा
कण - कण बदल रहा यहाँ
क्षणभर न कोई रूक सकता
नियति का कैसा खेल यहाँ

यहाँ जीवाणु छोटे - छोटे हैं
बड़े - बड़े प्राणी भी हैं
सबका अपना जीवन है
यहाँ सबकी अपनी वाणी है

निश्चित है सबका जीवन
सबका अपना आकार है
छोटे - बड़े सभी का
उपलब्ध यहाँ आहार है

कुछ धरा पर चलते हैं
कुछ नभ में हैं उड़ान लिये
कुछ जल में ही रहते
अपनी - अपनी शान लिये

शाकाहारी व माँसाहारी
सब प्रकार के जीव यहाँ
कुछ सर्व पक्षी हैं
तो कुछ के आहार अजीब यहाँ

कुछ चलते और फुदकते हैं
कुछ रेंगते व मचलते हैं
कुछ उड़ते दूर - दूर तक हैं
कुछ भागते हुए निकलते हैं

कुछ लड़ने वाले मूर्ख हैं
और बहुत यहाँ पर हिंसक हैं
कुछ शांत व सीधे - सादे
रहते सदा अहिंसक हैं

अपना - अपना स्वभाव है
व अपने जीवन के ढंग यहाँ
कुछ मानव से दूर - दूर
कुछ मानव के संग यहाँ

कई प्रकार के जीवों से
यह सुंदर संसार बना
रंग - बिरंगा कौतुक मय
कैसा यह आकार बना

नभ में उड़ने वालों की
करतब भरी उड़ानें हैं
आगे - पीछे ऊपर - नीचे
क्यों हैं कोई न जाने हैं

कब जनम है मरण है
कहाँ आना और जाना है
किससे जीवन में मिलना है
अनसुलझा ताना - बाना है

कैसे जादू से संचालित
सारी दुनिया के खेल यहाँ
अनजाने ही संयोगों से
होता बिछुड़न व मेल यहाँ

अति बुद्धिमान, शक्तिशाली
अति मूर्ख व बलहीन यहाँ
कुछ सदा है मुस्कुराते यहाँ
कुछ हरदम हैं गमगीन यहाँ

यहाँ कई प्रकार के हैं प्राणी
कुछ हर दम मानव के पास हैं
कुछ रहते दूर जंगलों में
सदा करते वहीं निवास हैं

सबकी अपनी सोच हैं
अपने रहने के ढँग हैं
कुछ शान्त सौम्य सीधे हैं
कुछ करते हरदम जंग हैं

दिन में देख नहीं सकते
रात ही उनका सवेरा है
कुछ गुफाओं में रहते हैं
कुछ का डालों पर डेरा है

कुछ विशेष ऋतु में दिखते
अद्‌भुत उनका संसार है
अपने छोटे से जीवन में
करते विचित्र व्यवहार हैं

कुछ अल्पायु कुछ दीर्घायु हैं
कुछ झुंडों मे विचरते हैं
कुछ को भाता अकेलापन
तो कुछ मनमानी करते हैं

छोटे - बड़े सब जीवों से
रंग - बिरंगा यह संसार है
कैसा भी हो जीवन चक्र
चाहत सबकी प्यार है

कई प्रकार की ऋतुओं से
सुन्दर यह संसार है
सबका अपना वक्त है
और सबकी दरकार है

कभी गर्मी का है मौसम
तपता है सारा जहाँ
व्याकुल सब हो उठते हैं
जायें तो अब जायें कहाँ

ठंड का मौसम आते ही
सब छिपते फिरते यहाँ - वहाँ
कैसे यह मौसम जाये
करते अनेक उपाय यहाँ

यहाँ वर्षा के मौसम में
हर ओर पानी ही पानी है
चहक रहे हैं पशु - पक्षी
सबको प्यास बुझानी है

भूगर्भ में यदि देखे तो
हर प्रकार के रत्न यहाँ
सब कुछ यहाँ उपलब्ध है
करना पड़ता प्रयत्न यहाँ

सब कुछ धरा से निकला है
सब इसी में समाना है
कैसा अद्‌भुत चक्र यह
न आना कुछ न जाना है

जो भी वांछित वस्तु है
आगे जिसकी दरकार है
यहाँ पहले से है बनी हुई
यह कैसा चमत्कार है

कैसे यह सब संभव हुआ
कैसे हर कुछ बना यहाँ
कब तत्वों का संयोग हुआ
कहाँ से आया यह जहाँ

अनेकों प्रकार की वस्तुयें
अनेकों प्रकार के नाम हैं
सबकी यहाँ जरूरत है
सबका अद्‌भुत काम है

वही है धरती वही गगन
बहता पानी, बहती पवन
कभी है पतझड़, कभी बसंत
चमक रहे सब वन उपवन

दूर सितारों पर भी देखो
कहते दुनिया रहती है
कभी - कभी आते संकेत
जाने क्या हमें कहती है

प्यार भी है नफरत भी है
फैली यहाँ संसार में
कुछ बुरा हैं सदा करते
कुछ देते खुशियाँ उपहार में

जैसी भी यह दुनिया है
जिस प्रकार के लोग है
इनमें ही हमें जीना है
सब अद्भुत संयोग है

भरपूर यहाँ सब कुछ है
अद्भुत बना संसार है
परिश्रम से सारे सपने
हो सकते साकार हैं

चट्टानें, पत्थर, पानी
अंदर कई खजाने हैं
कोई बन रहा कोई टूट रहा
ऐसा क्यों कोई न जाने है

संतुलन कैसे बना हुआ
भू अंदर कैसी रचना है
क्यों और कैसे घूम रही
यह कैसी अद्भुत घटना है

कहीं बहुत दूर तक बर्फ जमी
कहीं दूर - दूर यहाँ पानी है
कहीं घने अंधेरे जंगल हैं
रेगिस्तान भी इक कहानी है

मेघ गगन पर छाये हैं
बह रही समीर सुहानी है
घनघोर वर्षा से कहीं - कहीं
दिखता पानी ही पानी है

कहीं गर्म हवायें बह रहीं
कहीं तपती रेत के टीले हैं
कहीं ठंडी पवन के झोके हैं
कहीं सुंदर - सुंदर झीलें हैं

सागर के अंदर में भी
अद्‌भुत जीवों का डेरा है
हैं रंग - बिरंगें छोटे - बड़े
पानी ही साँझ सवेरा है

जल में हैं उत्पन्न हुये
और जल में ही समायेंगे
आहार वहीं से पाते हैं
यह क्यों जान न पायेंगे

बहुमूल्य अनेकों रत्नों के
इसमें हैं भंडार भरे
अनगिनत अथाह हैं यहाँ
हर ओर हैं अंबार लगे

सागर की भी सीमा है
और अपना संसार है
इसके अंदर क्या कुछ है
कोई पा न सकता पार है

जिसकी जहाँ जरूरत है
वह वहीं पर उत्पन्न हुआ
कैसा यह करिश्मा है
कैसे सब सम्पन्न हुआ

दो तिहाई धरती पर
जल के हैं अंबार यहाँ
कहाँ से आया, कब बना
इसका यह संसार यहाँ

हर जगह पर व्याप्त रही
पवन की क्या कहानी है
कहाँ से आई कैसे बनी
इससे दुनिया अनजानी है

कब धरती आकाश बना
सितारे कहाँ से आये हैं
दिन में सूरज रात में चंदा
कैसे सब बन पाये हैं

कैसे अग्नि प्रकट हुई
है इसकी भी कैसी रचना
कोई समझ नहीं सकता
यह भी है अनुपम घटना

सुदूर - दूर तक सागर में
लहरों के अद्‌भुत खेल यहाँ
कभी ज्वार कभी भाटा
चन्दा से कैसा मेल यहाँ

अजीब तरह के जल जन्तु
अनेकों यहाँ चट्‌टानें हैं
क्या कुछ है, इसके अंदर
क्यों हैं कोई न जाने है

अनेकों प्रकार की आवाजें
अनेकों हैं सुरताल यहाँ
सब कुछ लय में गूँज रहा
है प्रकृति का कमाल यहाँ

हर आवाज में अंतर है
सबकी हैं अपनी बोलियाँ
जितने जीव उतनी आवाजें
कैसे यह सब हो लिया

कुछ डरावनी आवाजें हैं
कुछ सुरीली व मिठास भरी
कुछ करती है निराश यहाँ
कुछ होती हैं, आस भरी

यहाँ कुछ आवाजें हैं अपनी
और कुछ आवाज पराई है
कुछ में होता सम्मोहन
कुछ से छिड़ी लड़ाई है

कब, क्यों, कैसे बना है
यह अद्‌भुत संसार यहाँ
हर चीज यहाँ उपलब्ध है
जिसकी है दरकार यहाँ

तरफ से हरा - भरा
कमी नहीं कुछ भी यहाँ
असंख्य जीव हैं जन्म लिए
और हो गये हैं फना यहाँ

कौन जग में क्यों आया
इसका भी कुछ ज्ञान नहीं
क्या घटित होना है उससे
इसको भी सकते जान नहीं

बहुत ही सुंदर मनमोहक
अद्‌भुत प्रकृति की माया है
कभी तो घना अँधेरा है
कभी धूप कभी छाया है

पेड़ों की शाखाओं से
परिन्दों की उड़ानें हैं
कल - कल बह रहा पानी है
बिखरी हुई चट्‌टानें हैं

अनेकों तरह से जन्म सब
ले रहे यहाँ प्राणी हैं
दो पाये हैं, चौपाये हैं
सब की अलग कहानी है

बहुरंगी और रहस्यमयी
सबकी होती कहानी है
जन्म है, बुढ़ापा है
बचपन है, जवानी है

कहीं दूर - दूर तक सूनापन
उदास साँझ सवेरा है
कहीं हर ओर है हरा - भरा
यहाँ पर्वतों का घेरा है

कहीं झुंड हैं पशुओं के
कहीं परिन्दों की कतारें हैं
कहीं दरख्तों से भरे हुये
यहाँ नदियों के किनारे हैं

उपयोग है, जिसका जितना
वह वस्तु है बनी यहाँ
रूप बदल जाता है
खत्म न होता कुछ यहाँ

निश - दिन का यह खेल
ना जाने कब से है यहाँ
अपने निश्चित समय पर
आ रहे जा रहे यहाँ

है सूर्य में कितना प्रकाश
सारा जग है, चमक रहा
इसके ढलने पर जग में
हर ओर अँधेरा पसर रहा

मानव सबसे अद्‌भुत है
इस सारे संसार में
नभ, जल, थल के सब
प्राणी इसके अधिकार में

अच्छे कर्म हैं यदि किये
तो कहलाता मानव है
बुरे कर्मों के कारण ही
इसको कहते दानव है

इसकी प्रगति के आगे
नतमस्तक यह संसार है
सब कुछ हैं बना लिये
सपने किये साकार हैं

सृजन और विध्वंस का
कैसा हुआ है मेल यहाँ
अद्‌भुत यंत्र बना डाले
अब सब लगता खेल यहाँ

पाषाण युग से नव युग तक
कितने परिवर्तन हुये यहाँ
संघर्षों की लम्बी गाथा है
सुख - दुःख के नर्तन हुये यहाँ

मानव शरीर की रचना में
प्रकृति ने सब कुछ दे डाला
सारी शक्ति से रचा इसे
अद्‌भुत यंत्र बना डाला

प्रकृति ने हर वह तत्व बनाया है
जिसकी यहाँ दरकार है
मानव ने रूप बदल करके
उसे दिया हर आकार है

सभी क्षेत्रों में यहाँ
हुआ बहुत विकास है
हर रहस्य मैं पा लूँगा
यह मानव का विश्वास है

सब की भिन्न - भिन्न शक्लें हैं
भिन्न ही हाथ की लकीरें हैं
कोई राजा है कोई रंक है
कैसी - कैसी तकदीरें हैं

यहाँ अपनी - अपनी सोच है
अपने काम के ढंग हैं
कोई सच्चाई पर हैं टिके
कुछ पल में बदलते रंग हैं

कुछ को लगता जग फूलों सा
कुछ कहते काँटे ही काँटे हैं
कुछ उदास रहते हर पल
कुछ हँसते और हँसाते हैं

कुछ श्रम करते हैं हर पल
कुछ का आलस ही साथी है
कुछ जगते रहते हर पल
कुछ को निद्रा ही भाती है

होते कई हैं सीधे - सादे
कुछ चुस्त और चालाक यहाँ
कुछ करते हैं उपकार सदा
कुछ करते सदा उत्पात यहाँ

कहीं दूर तक है निर्धनता
कहीं धन के हैं अंबार लगे
कोई कहता दुःख ही है, जग में
किसी को सुंदर संसार लगे

कुछ धर्म, कर्म में लीन हैं
कुछ करते हर दम ही पाप हैं
कुछ कहते प्रभु है जग में
कुछ को न यह विश्वास है

कुछ लम्बे तो, कुछ बौने
कुछ गोरे, कुछ काले हैं
कुछ डरते हैं यहाँ हर दम
कुछ निडर व दिलवाले हैं

कई स्वस्थ और बलशाली
कुछ बीमार व लाचार है
हर प्रकार के लोगों से
भरा हुआ यह संसार है

अपनी - अपनी सोच है
अपने जीने के ढंग हैं
कोई अकेला रहता है
तो कोई भीड़ के संग है

कोई कर्म करता सोच - सोच
कोई बिन सोचे कर जाता है
अच्छा - बुरा जो भी किया
यहाँ फल वैसा ही पाता है

जितने मानव हैं, जग में
जीवन सबका निराला है
क्या घटित होना है उसपर
कोई कह न सकने वाला है

कई धूर्त और महा पापी
बुरा ही केवल करते हैं
कुछ महामानव है जग में
सबके दुःखों को हरते हैं

तरह - तरह के मनुष्य हैं
तरह - तरह के काम हैं
कई भूख से तड़पते हैं
कई टकराते जाम हैं

कई देते हैं, हुक्म सदा
कुछ सदा ही सेवा करते हैं
जीवन सबका है गुजर जाता
जो जन्म लिये वो मरते हैं

किसी को मान सदा मिलता
कुछ अपमान ही सहते हैं
कई खुश रहते हैं, हरदम
कुछ रोते ही रहते हैं

कुछ का भोजन सादा है
कुछ का स्वादों में विश्वास है
कुछ के लिये हर चीज यहाँ
बनती हरदम खास है

कुछ का जीवन अपमान भरा
यहाँ कुछ सम्मान से जीते हैं
कुछ खुश रहते सदा यहाँ
कुछ हर दम गम ही पीते हैं

कहीं सुख - सुविधा के अंबार हैं
कोई भूख से बेहाल यहाँ
कई घमंड से तने हुये
कुछ के बुरे ही हाल यहाँ

मनुष्य की विलक्षण बुद्धि ने
सब कुछ यहाँ बना डाला
जो असम्भव सा था, जग में
प्रत्यक्ष उसे दिखा डाला

यहाँ कोई ऐसा क्षेत्र नहीं
जिसका न हुआ विकास है
जो दूर - दूर बैठे हैं
वो पल में होते पास हैं

अंधकार था, कभी यहाँ
अब हर ओर उजाला है
मेहनत और लगन के संग
ली ज्ञान की हाथ में माला है

प्रकृति और मानव का
चिरकाल का साथ है
गोद में इसको सदा रखा
कभी न किया अनाथ है

छोटी - छोटी खोजों से
मानव ने कदम बढ़ाये हैं
अभी अनेकों हैं रहस्य यहाँ
कुछ को ही सुलझा पाये हैं

अनेकों प्रकार के जीवाणु
शत्रु मानव के हैं यहाँ
थोड़ी सी नासमझी से
जीवन होता फना यहाँ

अनेकों प्रकार के धर्म
और अनेकों हैं, जातियाँ
सबके अपने नियम हैं और
उत्पन्न करते है भ्रातियाँ

कई परम्पराएँ हैं जग में
जो तर्कहीन और झूठी हैं
पर इन अंधविश्वासों से
मानवता की जड़ें टूटी हैं

सबको लगता है यहाँ
उसका ही धर्म निराला है
बाकी सब पाखंड है
उसका ही ऊपरवाला है

तर्कहीन सब बातों से
लड़ - लड़ मरते लोग यहाँ
धर्म, कर्म के झगड़ों में
तबाह लाखों रोज यहाँ

धर्म और विज्ञान का भी
होता कभी न मेल यहाँ
अपनी - अपनी सोच है
अपने - अपने खेल यहाँ

सब अपने - अपने ढंग से
जीवन जीते हैं यहाँ
अनेकों हैं परिपाटियाँ
धरा पर मानव के संग यहाँ

पहले मुर्गी थी या अंडा
सुलझा यह न कोई पाया
कई प्रकार के रहस्य यहाँ
जिनसे मानव है भरमाया

नर - मादा बनाकर कुदरत ने
क्या अद्‌भुत खेल रचाया है
आकर्षित करके आपस में
यह सृष्टि चक्र चलाया है

हर प्राणी में प्यार के
अपने - अपने ढंग हैं
नर - मादा मिल साथ - साथ
बिखराते खुशी के रंग हैं

कितना आकर्षण सम्मोहन
क्यों कोई जान नहीं पाया
प्यार से सब बंधे यहाँ हैं
यह भी कुदरत तेरी माया

मानव मन की गहराई को
यहाँ कोई समझ नहीं पाया
कितना भी समझाने पर
किया वही जो उसको भाया

मन को वश जो करते हैं
उनके बनते काम यहाँ
विवेकपूर्ण पथ चुनने पर
होता सदा ही नाम यहाँ

प्रतिपल बदलती दुनिया में
प्रभु तेरे अद्‌भुत खेल यहाँ
कब, क्यों, क्या हो जाना हैं
सुख - दुःख का ऐसा मेल यहाँ

कब क्या घटित हो जाना है
इस नश्वर जीवन के साथ
आपाधापी मचा - मचा कर
अंत में जाते खाली हाथ

जितने मानव हैं जग में
सबके अपने रंग यहाँ
सबकी अपनी चाल है
सबके अपने ढंग यहाँ

अनेक प्रकार के रोगों से
यह भरा हुआ संसार है
बढ़ते जाते रोग हैं
बढ़ता जाता उपचार है

मानव ने अपनी खोजों से
हर ओर किया उजाला है
लेकिन फिर भी दुनिया में
दुर्लभ कहीं निवाला है

कुदरत की है अकूत सम्पदा
मिलकर करें उपयोग यहाँ
कभी खत्म न हो सकती
कितना अद्‌भुत संयोग यहाँ

छोटी - छोटी बातों पर भी
लड़ - लड़ मरते लोग यहाँ
देश धर्म में बँट कर ही
रहे दुःखों को भोग यहाँ

जाति धर्म के झगड़ों में
बँटा हुआ संसार है
संकीर्ण सोच के कारण ही तो
इस जग में हाहाकार है

इक दूजे पर कर रहे
प्रतिपल घातक वार हैं
क्षणभंगुर इस जीवन में
क्यों इतना अत्याचार है

अनेकों तरह के रिवाज हैं
अनेकों तरह की बोलियाँ
रंग - बिरंगे परिधानों में
रहती लोगों की टोलियाँ

लोकगीतों के संग जब
बजते रहते ढोल यहाँ
गुंजित होते धरा अंबर
पुरखों के ऐसे बोल यहाँ

सब कुछ यहाँ संभव है
जब मिल कदम बढ़ते यहाँ
असम्भव को सम्भव बना
मानव गया है पहुँच कहाँ

इस अल्पकाल के जीवन में
मानव के अद्‌भुत खेल यहाँ
कभी सुख से कभी दुःख से
होता रहता है मेल यहाँ

कहीं नफरत की हैं नदियाँ
कहीं प्यार के सागर यहाँ
ये कैसे दिलों के रिश्ते हैं
इन रिश्तों से ही बना जहाँ

कभी खुशियाँ हैं आँखों में
कभी दुःख से है नीर भरी
प्रतिपल बदलते रंगों की
है इनमें तस्वीर बनी

धरा पर जो है जन्म लिये
इक दिन वो मिट जायेंगे
कुछ को अग्नि में जलना है
कुछ धरती में सो जायेंगे

हैं पाँच तत्व इस दुनिया में
जल, अग्नि, वायु, आकाश, धरा
जिससे ही दिखता यह जहाँ
हर ओर से हरा - भरा

कोई कहता प्रभु की माया है
यह प्रभु ने सृष्टि बनाई है
कुछ कहते हैं धीरे - धीरे
इस जग में खुशियाँ आई है

कुछ नाहक लड़ते हैं हरदम
कुछ देते मार या मरते हैं
चाहे कुछ भी हो जाये यहाँ
किसी से कभी न डरते हैं

समझते खुद को बलशाली
है हमारे जैसा कोई नहीं
हमारी ही यह दुनिया है
लड़ सकता हमसे कोई नहीं

जब शक्ति होती हाथों में
विवेक काम नहीं करता है
दुरूपयोग करके शक्ति का
मानव मनमानी करता है

कुछ चालाक हैं दुनिया में
कई झूठ ही बोला करते हैं
कुछ रहते सत्य पर अडिग
कुछ कम ही तोला करते हैं

कुछ सुंदर कुछ डरावने हैं
कई डराते हैं कई डरते हैं
कुछ छीनते हक औरों का
कई दान सदा ही करते हैं

कुछ धनवान बहुत यहाँ
कइयों को धन के लाले हैं
पर भूखा कोई न सोता है
ऊपर वाला प्रतिपाले है

जीवन तो बीत ही जाता है
सबको इसका ज्ञान यहाँ
फिर नीयत में खोट क्यों
कोई न सकता जान यहाँ

किसी को यश मिला जग में
धन दौलत आराम मिला
बिखरी रही खुशियाँ पथ पर
जीवन में हर मुकाम मिला

कुछ रास्ते खोज रहे जग में
कहीं तो हमें मुकाम मिले
अब भाग - भाग थक चुके
हमें भी तो आराम मिले

मनचाहा जग में किसे मिला
है मन में सबके मलाल यहाँ
पल - पल कर वक्त बीत गया
सब सुनाते अपना हाल यहाँ

धर्म के नाम पर झगड़े भी
हैं होते रहते रोज यहाँ
सबको लगता हम सही
रहे अपनी डफली खोज यहाँ

कोई समझा नहीं सकता है
कोई तर्क यहाँ चलता नहीं
न जाने कैसा पागलपन
दीया प्यार का जलता नहीं

कुछ कर्मरत हैं दुनिया में
कुछ करते केवल बात हैं
कुछ बाँटते रहते हैं खुशियाँ
कुछ देते दुःख की सौगात हैं

कुछ धोखा देते हैं हर पल
कई धोखा खा जाते हैं
कर्म फल तो निश्चित है
जैसा बोते वैसा पाते हैं

जोड़ - तोड़ करते हैं कुछ
फिर भी कुछ नहीं पाते हैं
साम - दाम, दण्ड, भेद
यहाँ नीति हर अपनाते हैं

रहस्य कई हैं जीवन में
नहीं कभी कोई जान सका
चल रहा कैसे ये जग
थक - हार गये सब ज्ञान लगा

इक चेहरे पर कई चेहरे हैं
पल - पल रंग बदलते हैं
जीत सत्य की होती है
झूठे हाथ ही मलते हैं

कई प्रकार के धर्म यहाँ
कई प्रकार के बंदे हैं
कुछ तो उजले - उजले हैं
कुछ के काले धन्धे हैं

कई प्रकार के नियम यहाँ
कई प्रकार की बातें हैं
कुछ मन के सीधे - सादे हैं
कुछ हर पल ही इठलाते हैं

कुछ की बातें कड़वी हैं
कुछ की हैं मिठास भरी
कुछ तो दिल तोड़ा करते हैं
कुछ की बातें हैं आस भरी

कई रोते व चिल्लाते हैं
कुछ हैं चेहरे मुस्कान भरे
कुछ नास्तिक हैं जग में
कुछ प्रभु का नित ध्यान धरें

गहराई से यदि देखें हम
कोई किसी का नहीं यहाँ
स्वार्थ से हैं जुड़े सब
गुजार रहे हैं वक्त यहाँ

बहुत ही सुंदर धरती है
अद्‌भुत इसके काम हैं
ऊपर में नीला अंबर है
प्यारी सुबह व शाम है

कभी बादल छाते नभ पर
कभी निकलती धूप यहाँ
कभी शीतल कभी तप्त पवन
प्रकृति के अनेकों रूप यहाँ

नित नवीन होती धरा
रूप बदलता जाता है
कैसे यह सब हो रहा
कोई समझ नहीं पाता है

पशु - पक्षी हैं रंग बिरंगे
सबकी अपनी शान है
सबके अपने स्वभाव हैं
अपने - अपने गान हैं

संतुलन बना हुआ है जग में
कोई आ रहा है कोई जा रहा
रहस्य यहाँ है कण - कण में
जिसे समझ न कोई पा रहा

कोई हँसता है कोई रोता है
कोई जाग रहा कोई सोता है
दया धर्म कहीं हो रहा
मिलता वही जो बोता है

इक पल का नहीं भरोसा है
कब यहाँ क्या हो जाये
मिल जायें कब सभी खुशियाँ
पल में कब सब खो जाये

रूकने से है कब रूका
जो होना है सो होना है
चलते - चलते क्या हो जाये
जीवन भी एक खिलौना है

हैं झूठ बोलने वाले भी
और बड़े हैं मक्कार यहाँ
हैं भोले - भाले चेहरे
पर हैं रंगे सियार यहाँ

हर प्रकार के लोगों से
यह भरा हुआ संसार
है खाते - पीते रोते गाते
हो जाता जीवन पार है

कुछ तो हैं वाचाल यहाँ
धारण मौन हैं कुछ किये
कुछ घर गृहस्थी वाले
कुछ सन्यासी बन कर हैं जिये

कुछ भोले - भाले सीधे हैं
कई चतुर व शैतान यहाँ
कुछ को मिलता मान सदा
कई का होता अपमान यहाँ

कुछ वाचाल बन छलते हैं
सीधे - सादे लोगों को
वे ही सदा यहाँ जग में
भोगते हैं दुःख रोगों को

वक्त कभी न रूकता है
भागता जाता है पल - पल
सुख - दुःख सदा ही आने हैं
नहीं देखते आज और कल

कोई तो राज कर रहा
कोई भीख माँगता है यहाँ
कोई दीन व दुखिया है
कोई नाचता है यहाँ

पल का न ठिकाना है
कब क्या घटना घट जाये
सब का एक ही मकसद है
जीवन सुख से कट जाये

कीमत चुकानी है जग में
अगर यहाँ कुछ पाना है
किस रूप में कीमत होगी
रहस्य भी यह अनजाना है

किसके अंदर है क्या छिपा
क्या विचार है कर रहा
जानता उसके सिवा न कोई
किन सपनों में है विचर रहा

बचपन में कई साथी थे
कोई कहाँ और कोई कहाँ
खेलना - खाना हँसना - रोना
जिनके साथ था हुआ यहाँ

हैं झूठ बोलते कई यहाँ
झूठ का ही लेते सहारा हैं
विश्वास जो करता है उनपर
वो फिरता मारा - मारा है

तरह - तरह के लोगों से
भरा हुआ संसार यहाँ
रंग - बिरंगे घर - बार हैं
और संतरंगे त्योहार यहाँ

पेट चलाने को जग में
करते अनेकों कर्म यहाँ
है जग में अनेकों जातियाँ
और अनेकों धर्म यहाँ

आपस में कभी लड़ते हैं
कभी ज्ञान की बातें करते हैं
पल में रंग बदल लेते
कभी रोते कभी हँसते हैं

कुछ ठगते हैं यहाँ सबको
सबसे कुछ ठगाते हैं
कुछ बहुत ही सीधे हैं
कुछ जुल्म सदा ही ढाते हैं

कई पाप कर्म में रत यहाँ
कुछ सदा भला ही करते हैं
कई करते हैं सृजन यहाँ
कुछ नींव विध्वंस की रखते हैं

हर प्रकार के लोग हैं
स्वस्थ व अस्वस्थ यहाँ
वक्त पल - पल जा रहा
कुछ सार्थक कुछ व्यर्थ यहाँ

कुछ होते हैं अति चालाक
हर प्रकार से माहिर हैं
कितना भी छिपायें खुद को
हो जाते जग जाहिर हैं

बोलते बहुत ही मीठा हैं
कपट भरा है अंदर में
सीधे - सादे लोगों को
ठग लेते हैं पल भर में

जितने प्रकार के लोग हैं
उतने ही स्वभाव यहाँ
जाने क्या यह रहस्य है
यह किसका पड़ा प्रभाव यहाँ

कई प्रकार के लोगों से
जग में पड़ता पाला है
वक्त गुजर ही जाता है
लिये सुख-दुःख की माला है

दुष्ट भी हैं सज्जन भी हैं
कई प्रकार के लोग यहाँ
कुछ है देते सबको दुःख
देते कई खुशियाँ रोज यहाँ

सबका अपना जीवन है
अपनी - अपनी सोच है
कब कोई क्या कर देगा
कब खो बैठेगा होश है

कई तो रोग ग्रस्त हैं
कई स्वस्थ मतवाले हैं
कई छिप - छिप कर रोते हैं
कई खूब ठहाके वाले हैं

मिलता कुछ को प्यार यहाँ
कुछ प्यार को तरसते हैं
कहीं तो सूखा पड़ता है
कहीं बादल रोज बरसते हैं

कई प्रकार के ठगों से
पड़ता जग में पाला है
ऊपर से तो दिखते सज्जन हैं
दिल अंदर से काला है

जग की ऐसी रचना है
है काटना वही जो बोया है
यह कोई न जान सका
क्या पाया क्या खोया है

तरह - तरह के धर्मों में
हर प्रकार के लोग यहाँ
कुछ शांति से रहते हैं
कई लड़ते हैं रोज यहाँ

कई चालाक व शैतान हैं
हर वक्त चालें चलते हैं
कैसे किसी को दुख दें
इसके लिये मचलते हैं

कुछ घमंड से चूर हैं
अड़ते हैं अपनी बातों पर
मानते नहीं हैं कोई तर्क
होते भूत हैं लातों के

जो जैसा होता है जग में
साथी वैसे मिल जाते हैं
शैतान को मिलते हैं शैतान
सीधे को सीधे भाते हैं

कुछ ठगते और ठगाते हैं
दुनिया यह बहुंरगी है
सीधे - सादे को ठग लेते
बन कुछ दिन के संगी हैं

गहरे बहुत हैं मानव मन
कुछ कहते कुछ करते हैं
छुपा हुआ क्या है अंदर
कभी निडर कभी डरते हैं

दूर - दूर तक हैं लोग बसे
सबके रहने के अलग हैं ढंग
कुछ तो साधन संपन्न हैं
कई रहते सदा ही तंग

कुछ को स्वर्ग यहाँ लगता है
कहते कुछ सब नर्क यहाँ
अपनी सबकी सोच है
सोच - सोच में फर्क यहाँ

कई जुबान के पक्के हैं
कुछ झूठे मक्कार यहाँ
कई तो साथ निभाते हैं
कुछ करते पीठ पर वार यहाँ

स्वार्थ न पूरा होने पर
पल में बदलते लोग यहाँ
कुछ बुरे कुछ अच्छे हैं
कैसा सुदर संयोग यहाँ

इतनी बड़ी दुनिया है
अपने सबके विचार हैं
सबकी अपनी शक्लें हैं
अपना सबका व्यवहार है

हर मानव के अंगूठे पर
अलग - अलग रेखाएँ हैं
है धन्य प्रभु माया तेरी
तेरा भेद न कोई पाए है

थक गये सब लोग यहाँ
तुझे कोई जान नहीं पाया
प्रभु तुम्हारे चरणों में
सबने ही है शीश नवाया

मन किया वो कर दिया
हानि लाभ का ज्ञान नहीं
जाना किधर और कहाँ चले
इसे सकता कोई जान नहीं

कितना आनंद कितनी खुशी
बचपन में झलकती है
सब देख - देख आनन्दित हैं
प्यारी यह उम्र गुजरती है

चिन्ताओं का बोझ नहीं
जात - धर्म से ये दूर हैं
सबसे मिलकर रहते हैं
जो जीवन का दस्तूर है

कभी हैं रूठते कभी रोते
सारा घर घबराता है
तरह - तरह के प्रलोभन से
इन्हें मुश्किल से मनाता है

कब बीत जाता बाल पन
कुछ पता नहीं चल पाता है
यह जीवन की रीत है
सबका इससे ही नाता है

बाल सखा जो थे सारे
कोई किधर है कोई किधर
याद आता जब बचपन
समय जाता तब है ठहर

कब जाता है बीत बचपन
नहीं जान कोई पाता
कब सुनहरे मधुर पलों से
टूट जाता है अनुपम नाता

चाँद - सितारों की दुनिया
परियों की कहानी वाली
बादलों के पार जायें
उम्र बीत गई वह मतवाली

प्यारा फूलों सा बचपन
याद सभी को आता है
कितना प्यार उमड़ता है
बच्चा जब तुतलाता है

छोटे प्यारे बच्चों को
हर कोई पास बुलाता है
सबका मन खुश होता है
बच्चा जब मुस्कुराता है

सुन्दर प्यारे बोलों से
सबका मन मोह लेते हैं
मन आया तो हँस लिए
मन आया तो रोते हैं

कहाँ आना कहाँ जाना है
इसका भी कुछ ज्ञान नहीं
सुन्दर सुहाने बचपन सा
मिलता कभी सम्मान नहीं

सबसे प्यारा सबसे न्यारा
बच्चों का संसार यहाँ
इनकी अद्भुत अदाओं से
घर बार है गुलजार यहाँ

कब ये क्या कर डालेंगे
रखते हैं सब ध्यान यहाँ
कभी नन्हें - नन्हें सीधे - सादे
कभी नन्हें से शैतान यहाँ

बचपन में जो आनन्द मिला
दुर्लभ है बाकी जीवन में
याद आता है जब बचपन
लहर खुशी की आती मन में

झूठी सच्ची बातें सुन
सब हाँ मे हाँ मिलाते हैं
बच्चे हँसते रहें सदा
बूढ़े बच्चे बन जाते हैं

आनन्दमय हो सदा बचपन
दुःख का काँटा न लगे कभी
माँ - बाप देते हैं दुआएँ
हमारे बच्चे रहें सुखी

गया बचपन हुए जवान
बदल गया सारा संसार
रीति - नीति की दुनिया है
मिला कभी न सच्चा प्यार

जवानी की यह उम्र लिये
पतझड़ संग बहारें हैं
परिश्रम करने वालों को ही
मिलते यहाँ किनारे हैं

कहीं से मिलता प्यार है
कहीं नफरत की दीवार है
जात - पात धर्म - कर्म का
हर ओर यहाँ व्यापार है

यहाँ सतरंगी सपने हैं
और कठोर चट्टानें हैं
सागर की लहरें भी हैं
व प्यार भरे अफसाने हैं

यह उम्र बड़ी सुहानी है
जीवन में मिलता प्यार है
यहाँ कई रंग तमाशे हैं
सबका अपना व्यवहार है

जीवन को इक दिशा मिले
मानव करता कई उपक्रम है
जो भी जग से लेना है
करना पड़ता यहाँ श्रम है

यह जो उम्र जवानी की
दुख व सुख की छाया है
हर ओर बड़ा संघर्ष यहाँ
जैसा बोया वैसा पाया है

जब जीवन साथी मिल जाता
बन जाता है परिवार यहाँ
माँ - बाप बन जाने पर
होता नया संसार यहाँ

जीवन की रीति - नीति से
पाला जब पड़ जाता है
बड़ा - बड़ा बुद्धिमान भी
पहले तो घबराता है

कन्धों पर बोझ लिये
जीवन का हर पल ढोना है
कितना भी हो कष्ट यहाँ
धैर्य कभी न खोना है

सुख मिले चाहे दुःख मिले
जीवन में सहने पड़ते हैं
हर प्रकार के आँसू के
आँखों में सपने रहते हैं

समय निकल ही जाता है
हम रोते कभी हँसते हैं
कुछ समझ में नहीं आता
ये जग से कैसे रिश्ते हैं

झूठे सच्चे लोगों से
पड़ता यहाँ पर पाला है
सबकी अपनी सोच है
और जीवन सबका निराला है

जवानी की उम्र है यह
हर प्रकार के संघर्ष लिए
कई प्रकार की उलझन हैं
कभी गम तो कभी हर्ष लिए

हर ओर से परेशानी है
कहीं मिलता नहीं सहारा है
उस पर जिम्मेदारी है
वह जीता कभी हारा है

अपना परिवार व बच्चे लिए
इनमें सिमटी हैं दुनिया सारी
इन पर उमड़ता प्यार है
इनसे कोई न वस्तु प्यारी

अपने जीवन के निर्णय
खुद ही लेने पड़ते हैं
कहीं शान्ति मिलती है
कहीं बिना बात ही लड़ते हैं

इस उम्र की महिमा ऐसी
लोगों से होता मेल यहाँ
रिश्ते बनते व बिगड़ते हैं
कई प्रकार के खेल यहाँ

कभी लाभ कभी हानि है
बहुत कुछ सहना पड़ता है
कई रास्ते होते हैं आसान
कई रास्तों में डर लगता है

धर्म - कर्म और जात - पात
यहाँ अनेकों बन्धन हैं
ना चाह कर भी चलना है
भले ना चाहे इसे मन है

जवानी तपती धूप है
जवानी ठण्डी छाँव यहाँ
नियम से है बन्धे हुये
जवानी के हर काम यहाँ

परिश्रम करना हर पल है
सुख और दुःख हम साये हैं
किसको वह अपनी बात कहें
कई उससे ही आस लगाये हैं

कई प्रकार की मुसीबत हैं
कई प्रकार के आनन्द हैं
किस्मत के भी ताले यहाँ
कभी खुले कभी बन्द हैं

जीवन को देने पड़ते हैं
कई प्रकार के मोड़ यहाँ
अनजानी सब राहें हैं
कहीं घटाव कहीं जोड़ यहाँ

आता दिन कभी खुशी लिए
हर ओर रहता उल्लास है
ऐसा लगता कभी - कभी
सारा जग ही अपने पास है

दिन आता है कोई दर्द लिए
लगते दुःखों के अम्बार हैं
जिनका हल नहीं हो सकता
मन गम से होता बेजार है

प्रेम प्यार की गाथायें
इस उम्र की पहचान हैं
जो प्यार में डूब गया
उसे मान न अपमान है

कितना अद्‌भुत आकर्षण
नर - मादा के बीच यहाँ
प्यार कौन समझ पाया
देखता ऊँच न नीच यहाँ

प्यार अनमोल है जग में
जीवन की हर बहार लिए
सुन्दर बिखरी वादियों का
यह अद्‌भुत संसार लिए

चलता रहे जग अविरल
आपस में अद्‌भुत प्यार यहाँ
मिलन है नर - मादा का
प्रकृति का द्विव्य उपहार यहाँ

अनेकों प्रकार के काम हैं
कोई - कोई ही अपना है
रोटी, कपड़ा, मकान हो
यही सबका सपना है

जीने के लिए बहुत ही
यहाँ करना संघर्ष है
उदासीन कुछ हैं हो जाते
जिन्हें ना शोक ना हर्ष है

अनेकों प्रकार के लोग हैं
अनेकों प्रकार के काम हैं
कुछ करते परिश्रम सदा
कुछ करते सदा आराम हैं

जीवन सभी का कट जाता
यहाँ रोता कोई हँसता है
कोई तो पल - पल जीता है
कोई पल - पल मरता है

झूठे कपटी और मायावी
अनेकों प्रकार के लोग यहाँ
कब कौन कहाँ पर मिल जाए
बन जाए ऐसा संयोग यहाँ

कब किसको ठग लेते हैं
पता नहीं चल पाता है
चेहरे से भोले - भाले हैं
पर अन्दर से दिल काला है

जवानी की यह उम्र निराली
अनेकों ही बाधाएँ हैं
सुख साधन भी बहुत हैं
और अनेकों ही राहें हैं

हर ओर से अद्‌भुत
इस उम्र का यह पड़ाव है
कभी नफरत कभी प्रेम
बिछड़न कभी जुड़ाव है

सारे कर्तव्य व सारे रिश्ते
निभाने पड़ते हैं जवानी में
कुछ लोग हैं सीधे - सादे
कुछ रहते सदा कहानी में

कई गुण - अवगुण भी हैं
अपने अद्‌भुत संसार के
नफरत की यहाँ नदियाँ हैं
झरने भी हैं प्यार के

किसे कब क्या मिलना है
यह कोई जान नहीं पाया
रहस्य भरा है कण - कण में
कैसी प्रभु तेरी माया

कई साधन सम्पन्न हैं
कई होते गरीब हैं
कोई प्रभु को नहीं मानता
कोई उसके ही करीब है

कभी गगन आशाओं का
कभी निराशा के बादल हैं
होता जीवन कभी रंग भरा
कभी अँधेरा हर पल है

कई रंग तमाशे जीवन में
हर ओर दिखाई देते हैं
कुछ बाँटते हैं सदा
कुछ हर पल ही लेते हैं

अति धूर्त अति चालाक
हर प्रकार के लोग यहाँ
थोड़ा सा यदि लाभ मिले
मानव पर हैं प्रयोग यहाँ

इस विशालतम दुनिया में
जीना इतना आसान नहीं
सब कुछ यहाँ पर उलझा है
कोई सरल है काम नहीं

पल - पल धोखा और फरेब
देते रहते लोग यहाँ
फिर भी अच्छे बने हुए
क्या सुन्दर संयोग यहाँ

कई प्रकार के अपराधों से
मानवता कराहती है यहाँ
निर्दयी कठोर और निशाचर
हर ओर हैं रहते यहाँ

पति - पत्नी व बच्चों में
झगड़े चलते रहते हैं
जन्म देकर माँ - बाप भी
कई कष्ट यहाँ पर सहते हैं

देश समाज और घर का
जवान ही जिम्मेदार है
तन मन धन से सदा
उसे रहना पड़ता तैयार है

प्यार यहाँ अनमोल है
प्यार से चल रहा जहाँ
प्यार न हो यदि जग में
कौन किसका फिर कहाँ

माँ - बाप बन्धे बच्चों से
बच्चे बन्धे माँ - बाप से
जग चल रहा है सारा
इस प्यार के प्रताप से

कोई राजा बना बैठा
कोई रहता सदा फकीर है
किसी के बस की बात नहीं
अपनी - अपनी तकदीर है

सुख साधन के भण्डार हैं
हर एक को है नसीब नहीं
कई उड़ते हवाओं में
कुछ के खुशी करीब नहीं

व्यापार कई प्रकार के
करने पड़ते रोज यहाँ
रोटी, कपड़ा, मकान मिले
होती हरदम खोज यहाँ

दिन - रात कट जाते हैं
कई प्रकार की सोच लिए
मानव रोता व हँसता है
दुःख - सुख की खोज लिए

साथ समय के ही जग में
जवानी जायेगी बीत यहाँ
इक कहानी रह जानी है
ऐसी जग की रीत यहाँ

याद आयेंगे कर्म सदा
जो किए हैं जवानी में
अच्छे हुए या बुरे हुए
भले समझ या नादानी में

अब बुढ़ापा ही आना है
खुश होते कुछ रोते हैं
कुछ कहते खत्म हुआ जीवन
कुछ अब चैन से सोते हैं

स्वागत सभी को करना है
हर आती जाती उम्र का
ना टलने वाली नियति है
फर्क है केवल कर्म का

संचित यदि सतकर्म है
फिर कैसा रोना यहाँ
फूलों की है घाटियाँ
खुशियों भरा बिछौना यहाँ

फूलों सा महके जीवन
प्रभु ऐसा उपकार करें
कर जोड़ कर है प्रार्थना
ऐसा अपना संसार करें

झूठे और मक्कार भी हैं
सच्चे व ईमानदार भी हैं
कई प्रकार की मनोवृत्ति है
सीधे व होशियार भी हैं

हर प्रकार के लोगों से
भरा पड़ा संसार यहाँ
सूरत सबकी अलग - अलग
अलग सबका व्यवहार यहाँ

दुनिया बहुत अजीब है
अद्‌भुत सारे लोग हैं
अपना - अपना जीवन है
मिलकर रहना संयोग है

किसी की धारणा है ऐसी
टस से मस नहीं होना है
कोई मानते तर्क नहीं
भले पड़े बाद में रोना है

कई बहुत बेईमान यहाँ
पलट जाते हैं बातों से
कहते कुछ और करते कुछ
लोग बचते उनकी घातों से

जीवन सबका कट जाता
कोई झूठ बोलता रहता है
कोई सत्य पर अडिग रहता
भले दुःख ही सहता है

ये रंग तमाशे दुनिया के
यूँ हीं चलते रहने हैं
कोई सफल है कोई असफल
सुख - दुःख सभी को सहने हैं

एक बार आता है बचपन
एक बार जवानी आती है
अंतिम में बुढ़ापा है
फिर होती खत्म कहानी है

कई लोग अपनी बातों से
पलट यहाँ पर जाते हैं
उनका विश्वास न कोई करता
जीवन भर धोखा खाते हैं

चालाक हैं खुद को समझते
पर बेवकूफ वे होते हैं यहाँ
करते बेकार की बातें हैं
चैन की नींद न सोते यहाँ

देते धोखा औरों को
खुद वे धोखा खाते हैं
अपने गलत कामों पर
जीवन भर पछताते हैं

बहुत ही सुन्दर धरती है
बहुत प्यारा आकाश है
लेकिन दुनिया में मानव
रहता क्यों उदास है

स्वभाव देख कर ही यहाँ
करते लोग व्यवहार हैं
किसी को सदा झूठ से
किसी को सच से प्यार है

कई प्रकार की आवाजें
आती रहती जड़ चेतन से
कुछ सुरीली कुछ दर्दीली
निकलती जो सदा मन से

अपनी - अपनी आवाजें
हर प्राणी है सुना रहा
पहचान ही आवाजें हैं
जिसे वह गुनगुना रहा

कुछ आवाजें शक्ति भरी
कुछ निर्बल आवाज है
कुछ आवाजें अमर हो गई
कुछ कल थी नहीं आज है

आवाजें सीधी सच्चीं हैं
कुछ आवाजें मान भरी
कुछ में प्रेम बरसता है
कुछ आवाजें अपमान भरी

जो जन्मजात स्वभाव है
वो कभी बदल नहीं पाता है
जो परिस्थितियों से बना
वह स्वभाव ही हट जाता है

जग ऐसे ही चल रहा
प्रभु के कैसे खेल यहाँ
कोई समझ नहीं सकता
किससे कब हो मेल यहाँ

बड़ी समस्या बड़ी उलझनें
विद्यमान है भू - तल पर
लेकिन फिर भी जीना है
उम्र गुजरती पल - पल कर

कई प्रकार के भावों से
भर जाता मानव मन है
आशा व निराशा से
प्रभावित होता तन मन है

बहुत कुछ है छिपा हुआ
इस सृष्टि के कण-कण में
कभी यह खत्म नहीं होगा
जो भी है धरती गगन में

सम्पदा के भण्डार हैं
नजर जिधर भी जाती है
सदियों से उपयोग हो रहा
फिर भी कमी न आती है

प्रभु तुम्हारी यह लीला
कभी कोई समझ नहीं पाया
ऋषि, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी
सबको है तुमने भरमाया

प्रभु तुम्हारी सृष्टि का
विहंस वर्णन न कर पायेगा
कब कैसे है यह बनी
यह सोच सदा भरमायेगा